पेज - ① B.A - III

किसलय पटेल (हिन्दी - विभाग)
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर
दिनांक - 30.05.2020

मानसरोवर : प्रथम भाग
प्रेमचंद

ईदगाह

प्रश्न - 'ईदगाह' कहानी की अन्तर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - 'ईदगाह' में भारतीय संस्कृति के रस में सराबोर भारतीय त्योहार ईद का जितना जीवंत, खुशनुमा, चुलबुला और उमंगों से परिपूर्ण चित्र प्रेमचंद ने खींचा है, वह दुर्लभ है। इस खुशनुमे और चुलबुले माहौल के बीच करुणा की एक अंतःसलिला भी बहती दिखाई पड़ती है। इसमें समाज की विडंबना उद्घाटित हुई है। इस कारण कहानी का प्रभाव और

ON OF INDIA

पेज - (2)

और शक्ति बढ़ गई है। कहानी बच्चों के माध्यम से कही गई है। महत्वपूर्ण बात यह है कि त्योहार को भी बच्चों की नजर से देखा गया है, जिससे एक उत्साह उमंग और ताजगी आ गई है। पर्व-त्योहार में बच्चे ही रंग भरते हैं। बच्चों की दुनिया अजीब होती है। यह चिंता और फिक्र से कोसों दूर होती है। पर क्या, सभी बच्चों का 'बचपन' नसीब हो पाता है? गरीब बच्चे 'बचपन' की दहलीज से गुजरते नहीं कब कर पार कर जाते हैं और 'परिपक्वता' का लबादा ओढ़ने को विवश होते हैं। यह भी कह सकते हैं कि गरीबी और भूख के थपेड़े, मजबूत - मजबूत को 'कठोर' हो जाते और अपने भीतर दुनिया को झेलने की ताकत

पेज -(3)

विकसित कर लेते हैं। लेकिन जरा सा कुरेदने पर उनका व्यवहार तुरंत कुलांच मारने लगता है। प्रेमचंद ने कहानी की शुरुआत जिस प्रकार की है वह बेमिसाल है

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर कितना सुहावना प्रभात है वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है।"

यह गाँव के लोगों की ईद है जहाँ विपन्नता का साम्राज्य है। पर इससे ईद मनाने के उत्साह में रंचमात्र भी कमी नहीं आई है, बल्कि उत्साह और उमंग में आज गरीबी भी ताक पर रख दी गई है

ईदगाह जाने की अकरा तफरी मची हुई है। इस अकरा तफरी के बीच ग्रामीण संस्कृति का मोहक दृश्य उभरता है।

किसी के कुरते में बटन नहीं है तो वह सुई धागा लेने के लिए पड़ोस के घर जा रहा है। पर्व त्योहार के दिन या फिर गाँव से कहीं बाहर जाना होता है तभी ग्रामीण जूता पहनते हैं। चमड़े के जूते रखे रखे कड़े हो जाते हैं इसलिए उसमें तेल डलवाने के लिए कोई तेली के लिए यहाँ दौड़ा जाता है ताकि जूता मुलायम हो जाए। पर्व हो या त्योहार या कोई विशेष दिन कृषि संस्कृति से जुड़े लोगों को कुछ काम तो अवश्य करने पड़ते हैं, जैसे बैलों को सानी पानी देना। प्रेमचन्द इसे भी नहीं भूलते। कुल मिलाकर गाँव में मनाई जानेवाली ईद का

एक मुकम्मल चित्र उभरता है जिससे आज भी अनेक लोग अपरिचित हैं। उनकी कहानियों में अलग-अलग रचना में भारतीय संस्कृति की कई धाराएं देखने को मिल जाती है जिनमें प्रेम, सौहार्द, और अपनापन की सुमधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है।

शहर की ईद और गाँव की ईद में बड़ा फर्क है। शहर की ईद संपन्नता से सजी होती है जिसमें कृत्रिमता और औपचारिकता होती है, गाँव की ईद पर विपन्नता और अभाव की छाया मंडराती रहती है, परन्तु इसके बावजूद यहाँ की ईद में अपनापन, अनौपचारिकता और अल्हड़पन होता है।

प्रेमचन्द ने इस कहानी को बच्चों की नजर से पेश किया है। बच्चों के उत्साह और उमंग का जिक्र करते समय वे भी बच्चे बन जाते हैं। — क्रमशः